

**वितंत** पुं. (तद्.) संगी. बिना तार का बाजा *वि.* बिना तार का।

**वितंस** पुं. (तत्.) 1. पक्षियों या छोटे पशुओं को फँसाने का एक विशेष प्रकार का जाल या उन्हें बाँधने का साधन 2. पिंजड़ा।

**वित** पुं. (तत्.) 1. धन, वैभव 2. शक्ति *वि.* कुशल, जानकार।

**वितत** *वि.* (तत्.) 1. विस्तृत, लंबा-चौड़ा 2. फैला हुआ 3. खींचा हुआ (धनुष/धनुष की डोरी) 4. भरा हुआ, व्याप्त 5. संगी. पुं. (क) वीणा आदि तारों से युक्त वाद्ययंत्र (ख.) चमड़े आदि से मढ़ा हुआ वाद्ययंत्र जैसे- तबला, मृदंग आदि।

**विततधन्वा** *वि.* (तत्.) जिसने धनुष को पूरा खींच रखा हो। पूरा धनुष तानने वाला।

**विततवपु** *वि.* (तत्.) 1. लंबे चौड़े शरीर वाला, विशाल शरीर वाला।

**वितताना** *अ.क्रि.* (देश.) 1. अधीर होना, बेचैन होना, व्याकुल होना।

**वितति** स्त्री. (तत्.) 1. विस्तृत होने का भाव, विस्तार 2. परिमाण 3. समूह, झुंड 4. गुच्छा 5. पंक्ति।

**वितथ** *वि.* (तत्.) 1. मिथ्या 2. व्यर्थ, निरर्थक पुं. 1. भारद्वाज 2. गृह देवताओं का एक वर्ग।

**वितथ्य** *वि.* (तत्.) 1. जो तथ्य रहित हो 2. असत्य, मिथ्या।

**वितद्रु** स्त्री. (तत्.) 1. वितस्ता नदी जिसका उद्गम स्थल व्यवतुर-कश्मीर में है 2. पंजाब की नदी झेलम।

**वितनु** *वि.* (तत्.) 1. देह रहित 2. सारहीन 3. अति सूक्ष्म 4. कोमल तथा सुंदर 5. कामदेव।

**वितपन्न** *वि.* (तद्.) 1. जो किसी विषय में विशिष्ट कुशलता प्राप्त हो 2. व्युत्पन्न 3. प्रवीण 4. विकल।

**वितरक** पुं. (तत्.) 1. किसी विशेष वस्तु का वितरण करने वाला व्यक्ति 2. बाँटने वाला *वाणि.* वह

व्यक्ति या संस्था जो किसी उत्पादनकर्ता या उत्पादक की वस्तुओं (वस्त्र, यन्त्र, औषधि आदि) की बिक्री का समुचित प्रबंध करे।

**वितरण** पुं. (तत्.) 1. किसी वस्तु या धनराशि आदि को उचित रूप से बाँटने की क्रिया या भाव 2. अर्पित करना, बाँटना *वाणि.* 3. उत्पादन से हुई प्राप्ति को समान रूप से उत्पादकों में बाँटना 4. निर्माताओं द्वारा तैयार की गई वस्तुओं का व्यापारियों और दुकानदारों में विक्रय के उद्देश्य से दिया जाना।

**वितरन** पुं. (तद्.) बाँटना *दे.* वितरण।

**वितरना** *स.क्रि.* (तद्.) 1. किसी वस्तु को दूसरों के लिए वितरण करना 2. बाँटना।

**वितरिक्त** *अव्य.* (तद्.) व्यतिरिक्त, सिवा।

**वितरित** *वि.* (तत्.) 1. जिसका पूरी तरह वितरण किया जा चुका हो 2. बाँटा हुआ।

**वितरेक** *अव्य.* (तद्.) 1. व्यतिरिक्त 2. सिवा इसके अलावा, भिन्न।

**वितर्क** पुं. (तत्.) 1. किसी के दिए तर्क से भिन्न या प्रतिकूल उत्तर में दिया गया तर्क 2. विचार 3 संदेह या संदेह का विषय 4. अनुमान 5. दलील *काव्य.* एक अर्थालंकार जहाँ एक ही तरह के संदेह या वितर्क का वर्णन हो पर कुछ निर्णय न हो *नाट्य.* विभाव, संदेह, ऊहापोह आदि लक्षणों से युक्त एक संचारी भाव जिसकी अभिव्यक्ति विविध प्रश्नों तथा सिर, नेत्र आदि अंगों के भावपूर्ण संचालन से होती है।

**वितर्कण** पुं. (तत्.) 1. तर्क या विचार करने का भाव या क्रिया 2. वाद-विवाद 3. संदेह का व्यक्तीकरण।

**वितर्क-समाधि** स्त्री. (तत्.) योग. समाधि का वह प्रकार जिसमें समाधिस्थ चित्त में विश्व की इंद्रियग्राह्यता का विषय कुछ अंश में रहता है।

**वितल** पुं. (तत्.) पुराणों के अनुसार तलादि सात अधोलोकों में से तीसरा लोक पाताल भू.वि. सागर या महासागर की अत्यधिक गहराई पर